International Journal of Applied Research 2024; 10(11): 223-226

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(11): 223-226
www.allresearchjournal.com
Received: 12-09-2024
Accepted: 16-10-2024

रवि शंकर
शोधार्थी, इतिहास विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
रवि शंकर
शोधार्थी, इतिहास विभाग, चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

गोवा मुक्ति आंदोलन का अमर सेनानी : पं० गजाधर तिवारी वैद्य

रवि शंकर

DOI: https://dx.doi.org/10.22271/allresearch.2024.v10.i11d.12162

सारांश
भारत राष्ट्र में ऐसे अनेक क्रांतिवीर हुए, जिन्हें उनके त्याग, तपस्या, वीरता एवं देशभक्ति के कारण राष्ट्रीय–स्तर पर काफी पहचान मिली, परन्तु साथ ही साथ ऐसे भी अनेक महापुरूष हैं, जिन्हें स्थानीय स्तर पर तो वहाँ की जनता जानती है, परन्तु राष्ट्र–स्तर पर वे गुमनाम अथवा अल्पज्ञात ही रहे। शायद इसका कारण पूर्व के इतिहासकारों एवं शोधकर्ताओं का उपेक्षापूर्ण रवैया तथा किसी खास विचारधारात्मक इतिहास लिखने के प्रति विशेष झुकाव रहा है। वस्तुतः आजकल विद्वानों नें इतिहास–लेखन की उस कमी को पहचाना है तथा अल्पज्ञात एवं गुमनाम शख्सियतों के जीवन एवं राष्ट्रसेवा में किये हुए योगदान को प्रकाश में लाने का प्रयास करना प्रारम्भ किया है।
ऐसे भारत राष्ट्र के नभ में एक जगमगाते अग्नि–पुँज का नाम है पण्डित गजाधर तिवारी वैद्य। क्रांतिधरा मेरठ से संबद्ध यह वीर असाधारण व्यक्तित्व और महान कृतित्व का धनी था। भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम एवं हिन्दू–राष्ट्रवाद के उत्थान में पण्डित गजाधर तिवारी का योगदान आज भी बहुसंख्य भारतीय को नहीं पता है।

कूटशब्द : पं0 गजाधर तिवारी वैद्य, वीर सावरकर, गोवा, अखिल भारतीय राम राज्य परिषद, अखण्ड–भारत, जवाहर लाल नेहरू, विनायक मसूरकर महाराज।

प्रस्तावना
पण्डित गजाधर तिवारी का जन्म जुलाई 1915 में कानपुर जिला (उत्तर–प्रदेश) के फफूँद में एक कान्यकुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ था।[1] इनके पिताजी पण्डित यशोनन्दन तिवारी मेरठ में गवर्नमेजर मिर्डिल स्कूल, मण्डी केसर गंज, में प्रधानाचार्य थे। इनकी माताजी का नाम क्रांतो देवी था। अपने माता–पिता के चार पुत्रों में वे चौथे स्थान पर थे। अपने पिताजी के साथ पण्डित गजाधर सन् 1930 के आसपास मेरठ आ गये थे। पण्डित गजाधर का परिवार मेरठ में ही बस गया।
इनका विवाह रामो देवी जी से हुआ जिनसे इन्हें एक पुत्री एवं एक पुत्र की प्राप्ति हुई। पुत्री का नाम कला तिवारी (विवाहोपरान्त–कला अग्निहोत्री) तथा पुत्र का नाम पण्डित राजनारायण तिवारी पड़ा।[2]
पारंपरिक तौर पर उनका परिवार अध्यापन एवं पूजा–पाठ आदि से संबद्ध था, परन्तु आम जनमानस की जीवन–शक्ति एवं स्वास्थ्य की रक्षार्थ उन्होंने वैद्य की शिक्षा ग्रहण की तथा बैचलर ऑफ डेंटल सर्जरी (ठक्डै) की डिग्री प्राप्त की। साथ ही वे स्नातकोत्तर भी थे। गजाधर तिवारी की विशेषज्ञता चिकित्सा के यूनानी पद्धति में थी तथा उन्होंने मेरठ में दाल मण्डी सदर में दवाखाना खोला। पढ़ाई के साथ–साथ गजाधर तिवारी की रूचि सामाजिक–राजनीतिक कार्यकलापों में भी बढ़ती गई। विशेषतः वे महात्मा गाँधी के नेतृत्व में चलने वाले भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से आकर्षित हुऐ। उन्होंने भारत छोड़ो आन्दोलन में हिस्सेदारी की तथा इसी प्रकार 1945 ई० तक गाँधीवादी रास्ते पर चलते हुए स्वतंत्रता संग्राम में अपना योगदान दिया। परन्तु 1945 ई० तक गाँधीवादी तरीके व सत्याग्रह के रास्ते से उनका मोहभंग हो गया, जब उन्होंने मुस्लिम लीग एवं मुहम्मद अली जिन्ना के भारत–विभाजन संबंधी माँगों के सामने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस एवं गाँधीजी को घुटने टेकते हुए एवं अशक्त पाया।[3] अतः वे इस निष्कर्ष पर पंहुचे की भारत राष्ट्र को स्वतंत्र कराने के साथ ही साथ अखण्ड बनाये रखने में गांधीजी एवं कांग्रेस असमर्थ थे। उन्होंने 1945 ई० में कांग्रेस से नाता तोड़ लिया, तथा भारत को अखण्ड बनाये रखने के संघर्ष में कुद पड़े।
कांग्रेस की नीतियो से मोहमंग होने के पश्चात् पण्डित गजाधर तिवारी को राष्ट्र की सेवा करने की प्रेरणा महान स्वतंत्रता–सेनानी विनायक दामोदर सावरकर से प्राप्त हुई।

तिवारीजी ने वीर सावरकर द्वारा रचित ग्रंथ 1857 का स्वाधीनता समर, हिन्दुत्व, हिन्दू पदपादशाही, गोमान्तक आदि का अध्ययन किया तथा हिन्दू महासभा जिसका विनायक सावरकर ने छः वर्षों तक नेतृत्व किया था, से जुड़ गये।[4] महात्मा गांधी तथा जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व वाली कांग्रेस जब मुहम्मद अली जिन्ना के भारत–विभाजन जैसी माँग के समक्ष झुक गयी थी, तब हिन्दू–महासभा ही अखण्ड–भारत की लड़ाई अग्रणी–पंक्ति से लड़ रही थी। हिन्दू महासभा की नींव तो 1882 ई० में ही रखी जा चुकी थी, जब प्रदेश–स्तर पर हिन्दू–सभाऐं बनने लगी थी।[5] इनमें पंजाब, महाराष्ट्र तथा बिहार की हिन्दू सभाऐं सर्वाधिक सक्रिय थीं। हिन्दू धर्म की रक्षा तथा हिन्दू–समाज को मुस्लिम आक्रांताओं एवं दंगाइयो से बचाने के लिए जब अखिल भारतीय स्तर पर एक संस्था बनाने की आवश्यकता महसूस हुई, तब पण्डित मदनमोहन मालवीय की पहल पर पावन–नगरी हरिद्वार में वैशाखी के दिन दिनांक 13 अप्रैल, 1915 को अखिल भारत हिन्दू महासभा की स्थापना हुई थी।[6] पण्डित गजाधर तिवारी ने हिन्दू महासभा से जुड़कर अखण्ड भारत आन्दोलन में हिस्सा लिया। साथ ही वे स्वामी करपात्री महाराज (हर नारायण ओझा) के नेतृत्व वाली अखिल भारतीय राम राज्य परिषद से भी जुड़ गये, जिसकी स्थापना स्वामीजी नें सन् 1948 में की थी। 'धर्म संघ' भी हिन्दू समाज एवं संस्कृति की रक्षा के लिए स्वामी करपात्रीजी के नेतृत्व में कार्यरत थी।

सन् 1946 में कुशल नेतृत्व क्षमता का परिचय देते हुए *'धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो,'* के नारे के साथ पण्डित गजाधर तिवारी नें मेरठ में हिन्दुओं की रक्षा की, जब मुस्लिम लीग की 'सीधी कार्यवाही दिवस' पर बंगाल, बिहार के साथ–साथ मुस्लिम आक्रांताओं नें मेरठ में भी हिन्दुओं को निशाना बनाना चाहा था। धर्म संघ के नेतृत्व में उन्होंने हथियार के बल पर डरा कर जबरदस्ती मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं का पुनः धर्म परिवर्तन करवाया। अखण्ड–भारत के लिए प्रदर्शन करके जेल–जाने वाले समूह में वे शामिल रहे।

15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र तो हुआ, परन्तु साथ ही खण्डित भी हुआ। एक विशाल इस्लामिक राज्य 'पाकिस्तान' के अस्तित्व में आते ही भारत के पड़ोस में एक चिरस्थायी शत्रु भी प्राप्त हुआ। गजाधर तिवारी जैसे करोड़ों युवा भारतीयों के लिए भारत का विभाजन एक अत्यतं ही पीड़ादायक क्षण था। वीर सावरकर, श्यामाप्रसाद मुखर्जी, करपात्री महाराज आदि नें सार्वजनिक रूप से भारत–विभाजन पर अपना क्षोभ व्यक्त किया, परन्तु वे कर ही क्या सकते थे। कांग्रेस के मुस्लिम तुष्टिकरण नें आखिर पवित्र भारत माता के टुकड़े जो कर दिए थे। हिन्दू राष्ट्रवादियों के समक्ष जो सबसे महत्वपूर्ण कार्य था, वह था भारत राष्ट्र को और ज्यादा विखण्डित होने से बचाना तथा विदेशी सत्ता के अधीन बच गए भारत के अन्य हिस्सों को स्वतंत्र कराना जिससे घायल भारत माता सबल हों।

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष का एक ऐसा ही अभिन्न अंग रहा है गोवा। ऐतिहासिक रूप से गोवा को गोमान्तक, गोवापुरी, गोवेम्, गोपकपुर, गोपकपत्तक इत्यिादि नामों से जाना जाता है।[7] यूनानी इसे नेलकिन्डा तथा अरबी इसे सिन्दापुर अथवा सन्डाबुर के नाम से जानते थे। सम्मवतः भारतीय महाकाव्य महाभारत में वर्णित गोवाराष्ट्र भी गोवा को ही कहा जाता था। भारतीय प्रायद्वीप के पश्चिमी तटरेखा पर स्थित गोवा भगवान विष्णु के छठे अवतार महाऋषि परशुराम से भी जुड़ा हुआ है। भारतीय शास्त्रों के अनुसार गोवा को प्राचीन काल में भगवान परशुराम नें समुद्र से लिया था, तथा यहाँ श्रीकृष्ण तथा मगध नरेश जरासन्ध का युद्ध हुआ था।[8] गोमंत पर्वत पर जरासन्ध नें आग लगा दी थी तो भगवान कृष्ण नें उस अग्नि को शांत किया था। इस प्रकार से गोवा भारतीय धर्म, संस्कृति तथा इतिहास का अभिन्न अंग रहा है। भौगोलिक, सामरिक एवं वाणिज्यिक रूप से काफी महत्वपूर्ण गोवा पश्चिमी घाट में स्थित है, जिसकी लम्बी तटरेखा है।

गोवा पर पिछले 450 वर्षों से पुर्तगालियों का शासन बरकरार था। गोवा पर पुर्तगालियों ने 25 नवम्बर 1510 ई० में कब्जा किया था, जब पुर्तगाली गर्वनर अल्फाँसो डी अल्बुर्कक नें इसे बीजापुर के आदिल शाह से जीता था। 1947 में जब अंग्रेज साम्राज्यवादी भारत को छोड़ गये थे, तब भी पुर्तगाल गोवा पर अपना नियंत्रण बनाये हुए था। इस साम्राज्यवादी पराधीनता के अंतर्गत गोवा में इसाई मिशनरिज द्वारा हिन्दुओं को जबरदस्ती धर्म–परिवर्तन कराकर ईसाई बनाया जाता था। ईसाई पादरियों द्वारा हिन्दुओं पर अनेक अमानवीय अत्याचार किये जाते थे।

पुर्तगाली पादरियों द्वारा गोवा में वहाँ की हिन्दू जनता और हिन्दू धर्माधिकारियों पर जो नृशंस एवं धार्मिक द्वेष से प्रेरित अत्याचार हुए, उसका वीर सावरकर ने सटीक वर्णन साहित्यक स्त्रोतों के आधार पर किया है। ईसाई मिशनरी सेंट जैवियर के पुर्तगाली शासक को लिखे पत्रों का हवाला देते हुए वीर सावरकर ने पुर्तगाली अत्याचार एवं हिन्दुओं के दृढ़ प्रतिकार का वर्णन किया है। सेंट जैवियर पुर्तगाल के शासक को संबोधित करते हुए लिखता है– ''....हिन्दुस्तान में ईसाई धर्म के प्रचार में सर्वाधिक और मुख्य बाधा यहाँ के ब्राह्मण पहुँचा रहे है। वे हमारे धर्म–प्रचार को आगे नहीं बढ़ने देते। हम हजारों हिन्दुओं को भ्रष्ट करते हैं, परंतु कुछ समय बाद पता चलता है कि ये ब्राह्मण उन्हें गुप्त रूप से मांडवी नदी के तट पर ले जाकर उनसे कहते हैं– 'आप लोग इस पवित्र नदी में स्नान करें और फिर जैसे मैं बताऊँ उसी प्रकार इन श्लोकों का पाठ कीजिए, जिससे आपके ईसाई बनने के समस्त पाप धुलकर नष्ट हो जाएँगे और आप लोग पूर्ववत् हिन्दू हो जाएँगे।[9]

एक अन्य पत्र में जैवियर पुर्तगाल शासित गोवा के हिन्दुओं के बारे में पुनः लिखता है– ''... हम उनकी (हिन्दुओं की) सारी सम्पति छीन लेते हैं, मूर्तियाँ तोड़–फोड़ डालते हैं, देवालय गिराकर नष्ट कर देते हैं, कोड़ों की मार से उनके शरीर की खाल उधेड़ डालते हैं। इन कार्यों में हमें प्रचण्ड सफलता प्राप्त हो रही है। यदि ये दुष्ट ब्राह्मण हमारे मार्ग में अवरोधक न होते तो मैं अब तक पूरी हिन्दुस्तान में देखते–ही–देखते धर्म का प्रचार–प्रसार कर डालता।''[10]

गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त कराकर भारत का अभिन्न हिस्सा बनाने का आह्वान वीर सावरकर नें ही किया था। साथ ही उन्होंने गोवा में रहने वाले हिन्दुओं का, जो ईसाई अत्याचारों के कारण ईसाई बन गये थे, शुद्धिकरण कर पुनः हिन्दू बनाये जाने की माँग भी सर्वप्रथम उठाई थी। वीर सावरकर से प्रेरणा प्राप्त कर सतारा जिला के मसूर निवासी, वैष्णव–संत विनायक मसूरकर महाराज नें गोवा जाकर पुर्तगालियों द्वारा ईसाई बनाये गये हजारों हिन्दुओं को पुनः शुद्ध करके हिन्दू बनाया। जब ईसाई पादरियों के दबाव में पुर्तगाली शासन नें स्वामी विनायक मसूरकर को गिरफ्तार कर लिया, तब वीर सावरकर नें हिन्दू महासभा के जानेमाने नेता डॉ बी०एस० मुँजे एवं एन०सी० केलकर को स्वामी मसूरकर की रिहाई के लिए गोवा भेजा। बाद में पुर्तगालियों नें स्वामी मसूरकर को रिहा कर दिया।

तत्पश्चात् वीर सावरकर नें आह्वान किया कि भारत राष्ट्र का मतलब केवल ब्रिटिश–भारत हीं नहीं, बल्कि वे अन्य उपनिवेश भी हैं, जो कि पुर्तगालियों, डचों तथा फ्रेंच साम्राज्यवादियों के अधीन हैं।[11] मार्च 1928 को पत्रिका *श्रद्धानंद* में सावरकर का एक लेख छपा *'गोमान्तक' को न भूले',* जिसमें उन्होंने गोवा को पुर्तगालियों की अधीनता से स्वतंत्र कराने की अपील देशवासियों से की थी।[12] अखिल भारत हिन्दू महासभा के अहमदाबाद अधिवेशन में अध्यक्ष के तौर पर उन्होंने उद्घोष किया– ''हम हिन्दुस्तान की पूर्ण स्वाधीनता चाहते हैं। फ्रेंच हिन्दुस्तान, पोर्तुगीज हिन्दुस्तान इन नामों का उच्चारण भी हमारे कानों के लिए असह्य एवं हमारी मूर्खता का प्रतीक है। इस कृत्रिम और बलात् किये हुए राजकीय विभाजन को हमें पूरी तरह से समाप्त करके अखंड हिन्दुस्तान बनाने की शपथ लेनी चाहिए। हम हिन्दुओं को दृढ़ता

के साथ घोषित करना चाहिए कि कश्मीर से रामेश्वरम् तक एवं सिंधु से असम तक अखंड संयुक्त एवं अभिन्न हिन्दुस्तान ही हमें मान्य होगा। हमें गोआ, पांडिचेरी आदि को पुर्तगाली दासता से मुक्त कराने के लिए भी संघर्ष करना होगा।''[13]

अखिल भारत हिन्दू महासभा के मंच से अध्यक्ष सावरकर की अपील से गोवा मुक्ति आन्दोलन में काफी तीव्रता आई। सन् 1928 में *गोवा हिन्दू सभा* के बड़े नेताओं नें आकर विनायक सावरकर से मुलाकात की। भारत की आजादी के बाद तब गोवा मुक्ति आन्दोलन और ज्यादा उग्र हुआ तो सावरकर नें बयान जारी कर आन्दोलनकारी वीरों को निर्देशित किया कि अगर संसाधन पर्याप्त हों तो गांधीवादी सत्याग्रह के साथ–साथ सनातन हिन्दू परंपरा में मान्य *शस्त्राग्रह* का भी प्रयोग हो।[14] उन्होंने उद्घोष किया कि जैसे प्राचीन हिन्दू संस्कृति में भगवान राम, कृष्ण, परशुराम आदि नें आततायी दुष्टों का समूल विनाश किया, वैसे ही आक्रांता ईसाई एवं मुस्लिमों का विनाश उचित है।

सन् 1954 में उनसे प्रेरणा प्राप्त कर महाजन सभा के वीर क्रांतिकारियों नें माहे, दादरा और नगर हवेली को स्वतंत्र करा लिया।[15]

सन् 1955 में गोवा मुक्ति आन्दोलन जोड़ पकड़ रहा था, तभी मेरठ स्थित पण्डित गजाधर तिवारी वैद्य भी वीर सावरकर के आह्वान से प्रभावित होकर उसमें प्राणपण से कुद पड़े। वे मेरठ हिन्दू सभा के प्रधान एवं मंत्री रह चुके थे। साथ ही वे स्वामी करपात्री महाराज के अखिल भारतीय राम राज्य परिषद पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रधान एवं मंत्री भी थे।[16]

सन् 1955 में गोवा मुक्ति आन्दोलन में हिस्सा लेने समस्त देश से सत्याग्रही एवं क्रांतिकारी जत्थे गोवा की ओर कूच करने लगे। मेरठ हिन्दू महासभा के जत्थे का नेत्रृत्व पण्डित गजाधर तिवारी नें किया।[17] 6 अगस्त 1955 को मेरठ का सत्याग्रही जत्था गोवा को पुर्तगाली साम्राज्यवादियों से आजाद कराने के लिए मेरठ से रवाना हुआ। विजय गीत गाते हुए गोवा को मुक्त कराने मेरठ की टोली जब मेरठ स्टेशन से रवाना हुई तो उन्हें विदा करने विविध उपहारों के साथ मेरठ का जनमानस उमड़ आया।[18]

''गोवा को उन्मुक्त कराने पुर्तगाल के शासन से
वीरों के दल उमड़े जाते बादल सावन से''
सड़कों से सब चौराहों से होती वीरों की टोली जाती थी,
बहनों नें इनके माथे पर छोड़ी रोली।
उमड़े रहे थे मेरठ वासी, बालक बुढ़े और जवान।
अपनी टोली के नेता थे वैद्य गजाधर सिंह समान।।

वीर गजाधर तिवारी गोवा को मुक्त कराने अपने वृद्ध पिता एवं दो छोटे बच्चों को छोड़कर धर्म संघ टोली संग दिल्ली पहुँचे जहाँ दिल्ली–वासियों नें इस जत्थे का भव्य स्वागत किया। नभ वंदे–मातरम् के नारों से गुँजायमान हो गया। दिल्ली से यह जत्था पहले ग्वालियर के लिए रवाना हुआ, फिर यह पूना पहुँचा। वहाँ मेरठ के वीरों की होली में कई सहस्त्र वीर और शामिल हो गये। गोवा को पुर्तगालियों के चंगुल से मुक्त कराने पूरे भारतवर्ष से हिन्दू महासभा एवं धर्म संघ के कार्यकर्ता उमड़ पड़े।[19] मेरठ हिन्दू सभा का जत्था जब हिन्दू महासभा के पूर्व अध्यक्ष वीर सावरकर से मिलने गया तो उन्होंने जत्थे के उपनेता एवं दैनिक प्रभात के संपादक श्री वि०स० विनोद से कहा –

''आप क्रांतिभूमि मेरठ से इतनी दूर गोआ को मुक्त कराने की अभिलाषा से गोलियाँ खाने, बलिदान देने आए हो, यह आप लोगों की देशभक्ति का परिचायक है। किन्तु सशस्त्र पुर्तगाली दानवों के सम्मुख आप निःशस्त्र, खाली हाथ, मरने को जाओ, यह नीति न मैंने तब ठीक समझी न अब ठीक समझता हूँ। जब आप लोगों के हृदय में बलिदान देने की महान भावना है तो आप लोग हाथों में राइफलें लेकर क्यों नही जाते ? शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित होकर जाओ और दुश्मन को मारकर मर जाओ।'' पण्डित गजाधर तिवारी नें वीर सावरकर से कहा कि– ''हम तो आपका आशीर्वाद लेने आये हैं।'' इस पर सावरकर नें आगे कहा कि– ''गोवा की मुक्ति का काम तो सरकार को सेना को सौंप देना चाहिए। सशस्त्र सैन्य कार्रवाई से ही गोवा मुक्त होगा। सत्याग्रह के स्थान पर शस्त्राग्रह से ही सफलता मिलेगी।''[20]

वीरों की टोली वीर सावरकर से आशीर्वाद लेकर फिर बेलगाँव के लिए प्रस्थान की। सामन्तवाड़ी होते हुए वीरों की टोली बाँदा पंहुची, जहाँ उसने पुर्तगाली सैन्य ताकत का सामना किया।[21] पुर्तगाली साम्राज्यवादियों ने जब यह जाना कि भारतीय सत्याग्रहियों की टोली बाँदा पंहुच चुकि है तब उन्होंने बाँदा को चारो ओर से अपने बंदूक–लैस सैनिकों से घेर लिया। वहीं पण्डित गजाधर तिवारी के नेतृत्व वाले जत्थे नें देखा कि गोवा अब कुछ किलोमीटर की दूरी पर ही हैं, तो उनका उत्साह भी दोगुना हो गया तथा वे 'जय गोवा, जय मातृभूमि' का नारा लगाते हुए और तीव्र गति से आगे बढ़ने लगे। जत्थे में सबसे आगे–आगे हाथ में भारत का राष्ट्र–ध्वज तिरंगा लिए और भारत माता की जय का उद्घोष करते पण्डित गजाधर तिवारी चल रहे थे।[22]

पुर्तगाली सैनिकों से जत्था जब केवल दस गज दूर रह गया था, तभी पुर्तगाली सैनिकों नें गोलियाँ चलानी शुरू कर दी। इसके बावजूद भी पण्डित गजाधर के नेतृत्व में भारतीय सत्याग्रहियो का जत्था आगे बढ़ता गया। वे सभी हाथों मे तिरंगा लिए *'जय भारत, जय भारत माता'* का नारा लगा रहे थे। पण्डित गजाधर तिवारी नें आगे बढ़कर गोवा–भूमि की मिट्टी हाथों से उठाकर माथे पर लगाई तथा *'जय गोवा जय मातृभूमि'* का उद्घोष किया। तभी सैनिक नें पण्डित गजाधर तिवारी की बाई जंघा में गोली मारी। घायल होने के बावजूद भी गजाधर तिवारी लंगड़ाते हुए आगे बढ़ते गये। असह्य पीड़ा होने के बाद भी रणबांकुड़े नें तिरंगे को हाथों से नहीं छोड़ा। तभी एक गोली गजाधर तिवारी की छाती को निशाना बना कर चलाई गई, लेकिन गोली निशाने से चूक गई। परन्तु दाहिनी जंघा गोली लगने से घायल हो गयी। अब गजाधर जी आगे चलने में असमर्थ हो गये, परन्तु पुर्तगाली आततायी उनकी हिम्मत तथा देशभक्ति को कम नहीं कर पाए। उन्होंने दो गोली लगने के बावजूद भी तिरंगा अपने हाथ से नहीं छोड़ा।[23] यह देख बाकी सत्याग्रहियों में और उत्साह जग गया। बाद में गजाधर तिवारी दोनो जंघाओं में गोली लगने से हुए छः इंच घाव के कारण होने वाले अत्यधिक रक्त–निकलने के परिणामस्वरूप अचेत हो गये। टोली के कुछ सदस्यों नें उन्हें वहाँ से हटाया। भारत के तत्कालिन प्रधानमंत्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू नें गजाधर तिवारी के स्वास्थ्य की चिंता की तथा उनके निर्देशन पर उन्हें बेलगाँव के अस्पताल में भर्ती कर दिया गया। वहाँ वे अस्पताल में पूरे एक महीना रहे। बी०बी०सी० लन्दन ने भी उनकी दोनों जंघाओं में गोली लगने की खबर को सुनाया, जिसे सुनकर पूरे देश की जनता उत्तेजित हो उठी।[24] मेरठ की जनता उनका दर्शन पाने को उतावली हुई जा रही थी। मेरठ के घरों में माताओं, बहनों एवं बुजुर्गों ने उनके स्वास्थ्य–लाभ के लिए ईश्वर से प्रार्थना एवं हवन–पूजन आदि किया। थोड़ा स्वास्थ्य–लाभ होने पर जब वे मेरठ आए, तो उनका दर्शन करने को रेलवे–स्टेशन पर लोगों का ताँता लग गया। चलने में असमर्थ होने के कारण युवा स्वंयसेवकों नें घायल गजाधर तिवारी को अपने कंधे पर चढ़ाकर उतारा। उनको जब घर ले जाया जा रहा था, तो मेरठ के बेगमपुल मैदान में जनता की भारी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी।

पण्डित गजाधर तिवारी जैसे वीर सत्याग्रहियों एवं देवतास्वरूप विनायक दामोदर सावरकर की प्रेरणा से अन्ततः भारतीय सैनिकों नें गोवा को पुर्तगालियों के चंगुल से 19 नवम्बर 1961 को स्वतंत्र करा लिया।[25] आज गोवा भारत वर्ष का अभिन्न अंग है।

आगे चलकर पण्डित गजाधर तिवारी नें स्वामी करपात्री महाराज के नेतृत्व में चले 1966 के गोहत्या विरोधी आन्दोलन में भाग

लिया, तथा जेल भी गये। गोहत्या–विरोध के समर्थन में गजाधर तिवारी ने चलती संसद में पर्चे फेंके तब सुरक्षाकर्मियों नें इन्हें हिरासत में ले लिया। बाद में स्वामी करपात्रीजी को कारावास से रिहा करवाने के लिए भी इन्होंने सफल आन्दोलन किया। जेल जाने का सिलसिला यहीं नही रूका। सन् 1975 में तत्कालिन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी के निर्देश पर जब देश मे आपातकाल घोषित कर दिया गया था, तब भारत में लोकतंत्र की पुर्नबहाली के आन्दोलन में पण्डितजी शामिल हो गए। आपातकाल के दौरान भी वे आपातकालिन कानून मीसा के तहत जेल गए। इस प्रकार अपने जीवन में वे कुल 23 बार जेल गये।[26] पण्डित गजाधर तिवारी एक सफल राजनीतिज्ञ भी रहे। मेरठ में गजाधर तिवारी की अत्यधिक लोकप्रियता थी। वे जनमानस के आँखों के सितारे थे। वे सोलह बार पार्षद चुने गये। पार्षद के रूप में उन्होंने जनकल्याण के अनेकों कार्य किए। बाद में भारतीय सेना नें उन्हें चुंगी कमेटी का चेयरमैन भी बनाया।[27] साथ ही वे मेरठ कैंटोनमेण्ट बोर्ड के भी अध्यक्ष रहे। हिन्दुत्व के प्रति वे आजन्म समर्पित रहे। भारतीय जनसंघ के समर्थन से उन्होंने चुनाव भी लड़ा परन्तु वे चुनाव में जीत नहीं पाए। परन्तु उन्होंने हिन्दू महासभा एवं जनसंघ आदि के माध्यम से हिन्दुओं के राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्थान से लिए जीवनपर्यन्त कार्य किया।

1980 के दशक में उनका स्वास्थ्य बिगड़ने लगा था। वृद्धावस्था में आर्थिक तंगहाली के कारण वे अपना उपचार उचित तरीके से नहीं करा पा रहे थे। सन् 1992 में जब उनका स्वास्थ्य ज्यादा बिगड़ गया तो उन्हें उपचार के लिए मेरठ स्थित सेंट ल्यूक हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया जहाँ मेरठ के प्रसिद्ध डॉक्टर पाठक की निगरानी में उनकी चिकित्सा की गई। परन्तु अस्वस्था बढ़ने के कारण 28 मई, 1992 को पण्डित गजाधर तिवारी ''वैद्य'' का निधन हो गया।[28] मेरठ की शोकाकुल जनता के दर्शनार्थ पण्डितजी की शवयात्रा 28 मई, 1992 को मेरठ में निकाली गई।

संदर्भ

1. साक्षात्कार, 29.05.2024, राजनारायण तिवारी, आयु 79 वर्ष, पुत्र पण्डित गजाधर तिवारी, मेरठ (उत्तर प्रदेश)।
2. साक्षात्कार, 11.08.2024, सुमित नारायण तिवारी, आयु 43 वर्ष, पुत्र राजनारायण तिवारी, मेरठ (उत्तर प्रदेश)।
3. वही।
4. वही।
5. साक्षात्कार, 12.07.2024, मुन्ना कुमार शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारत हिन्दु महासभा, हिन्दू महासभा भवन, नई दिल्ली।
6. वही।
7. Saxena RN. Goa: Into the Mainstream, Abhinav Publications; c2003, p. 20.
8. वही, पृ 21।
9. विनायक दामोदर सावरकर, भारतीय इतिहास के छह स्वर्णिम पृष्ठ नई दिल्लीः प्रभात प्रेस 2022, पृ. 185।
10. वही, पृ 186।
11. Vikram Sampath, Savarkar : A Contested Legacy 1924-1966, Delhi: Penguin Randam House India; c2021, p. 110.
12. वही, पृ 533।
13. शिवकुमार गोयल, अमर सेनानी सावरकर, नई दिल्ली : हिन्दी साहित्य सदन, 2019, पृ. 126।
14. साक्षात्कार, 29.09.2024 शुभम अग्रवाल, आयु 32 वर्ष पुत्र सुमन प्रकाश अग्रवाल, सिंह सभा रोड, दिल्ली।
15. Dhananjay Keer, Veer Savarkar, Mumbai, Popular Prakashan, Pvt. Ltd., Fourth Edition; c2019, p. 492.
16. साक्षात्कार, 29.05.2024, सुमित नारायण तिवारी आयु 43 वर्ष, पुत्र श्री राजनारायण तिवारी, मेरठ (उत्तर प्रदेश)।
17. वि० स० विनोद एवं विघ्नेश कुमार (सम्पादक), मेरठ के पाँच हजार वर्ष, हस्तिनापुर रिसर्च इंस्टीटयूट, 1996, मेरठ, पृ. 295।
18. वही, पृ. 296।
19. साक्षात्कार, 12.07.2024, मुन्ना कुमार शर्मा एवं सुनील कुमार,अध्यक्ष एवं महामंत्री, अखिल भारत हिन्दू महासभा, हिन्दु महासभाभवन, दिल्ली।
20. वही।
21. जगन्नाथ व्यासरचित कविता, गोआ का सत्याग्रह–गजाधर तिवारी की वीरता की कहानी, गोपाल प्रिंटिंग प्रेस, सदर मेरठ।
22. साक्षात्कार, 29.05.2024, सुमित नारायण तिवारी, आयु 43 वर्ष, पुत्र राजनारायण तिवारी मेरठ (उत्तर प्रदेश)।
23. वही।
24. साक्षात्कार, 18.07.2024, सुमित नारायण तिवारी, आयु 43 वर्ष, पुत्र राजनारायण तिवारी मेरठ (उत्तर प्रदेश)।
25. Ramchandra Guha, India After Gandhi: The History of The world's Largest Democracy, London, Picader India; c2007, p. 327.
26. साक्षात्कार, 18.08.2024, सुमित नारायण तिवारी, आयु 43 वर्ष, पुत्र राजनारायण तिवारी मेरठ (उत्तर प्रदेश)।
27. वही।
28. वही।